❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

आरे बाधस्व दुच्छुनाम्।।
साम 627

हे प्रकाशस्वरूप प्रमात्मन्! आप हमें दुष्प्रवृत्तियों से दूर हटाइए।
O the Luminous lord! keep us away from doglike habits such as greediness, quarriling and flattery etc.

वर्ष 41, अंक 35 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 18 जून, 2018 से रविवार 24 जून, 2018
विक्रमी सम्वत् 2075 सृष्टि सम्वत् 1960853119
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

समर्पण शोध संस्थान एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के संयुक्त तत्त्वावधान में

संन्यासी स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती जन्म शताब्दी समारोह सम्पन्न

आत्म विश्वास से भरपूर स्वामी जी के प्रवचनों से आभास होता था कि वे प्राचीन ऋषि व संन्यासी थे – *आचार्य वागीश*

स्वामीजी के अधूरे कार्यों को पूर्ण करना हम सबका सामूहिक दायित्व : उनकी तरह बड़े-बड़े काम करते रहें – महाशय धर्मपाल

समर्पण शोध संस्थान को पुनः गतिशील तथा उनके अधूरे कामों को पूरा किया जाए – *योगेश मुंजाल*

यदि किसी के पास स्वामीजी द्वारा प्रकाशित अप्रातव्य साहित्य हो तो उसे हमारा परिवार प्रकाशित करावा कर स्वामी जी के अधूरे कार्यों को पूर्ण करने का प्रयास करेगा – *नवीन रहेजा, रहेजा बिल्डर्स*

स्वामी दीक्षानन्द जी विद्यामार्तण्ड आत्मविश्वास से भरपूर थे। उनके प्रवचनों को सुनने मात्र से ऐसा आभास होता था कि जैसे हमारे सम्मुख कोई प्रचीन ऋषि व संन्यासी बैठे हों। ये विचार स्वामी दीक्षानन्द जी जन्मशताब्दी समारोह के अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं समर्पण शोध संस्थान के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 10 जून, 2018 को मावलंकर हॉल, रफी मार्ग, नई दिल्ली में आर्य जगत के वैदिक विद्वान मूर्धन्य आर्य संन्यासी, वृहद् यज्ञों के ब्रह्मा व लेखक विद्यामार्तण्ड स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती के जन्म शताब्दी समारोह के अवसर पर व्यक्त किए। आर्यसमाज मुम्बई में बाला साहब ठाकरे से हुई चर्चा के आलोक में कही।

– शेष पृष्ठ 3 एवं 5 पर

दीप प्रज्जवलन के साथ जन्मशताब्दी समारोह शुभारम्भ करते महाशय धर्मपाल जी साथ में हैं सर्वश्री सभा कोषाध्यक्ष विद्यामित्र ठुकराल, उप प्रधान शिव कुमार मदान, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, आर्य नेता रामनाथ सहगल जी, सभा प्रधान धर्मपाल आर्य, योगेश मुंजाल जी, आचार्य वागीश जी, एवं अन्य तथा हॉल में उपस्थित आर्यजन

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली : 25-28 अक्टूबर, 2018 : स्वर्ण जयन्ती पार्क, सै. 10, रोहिणी

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग बैठक सम्पन्न : विभिन्न समितियों के गठन को मंजूरी

सदस्यों ने लिया तन-मन-धन से पूर्ण सहयोग का संकल्प – निभाएंगे हर जिम्मेदारी

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा-महासम्मेलन-2018' के नाम भेजें अपना आर्थिक सहयोग

यथाशीघ्र होगी दिल्ली की समस्त आर्य संस्थानों की वृहद बैठक

– शेष पृष्ठ 5 पर

महाशय धर्मपाल जी के सहयोग से टीवी पर विज्ञापन एवं स्क्रोल लाइन का प्रसारण आरम्भ

वेद-स्वाध्याय

विविध अग्नियों का महान् विस्तार

सुदक्षो दक्षैः क्रतुनासि सुक्रतुरग्ने कविः काव्येनासि विश्ववित्।
वसुर्वसूनां क्षयसि त्वमेक इद् द्यावा च यानि पृथिवी च पुष्यतः।। -ऋ. 10/91/3
ऋषिः **अरुणो वैतहव्यः**।। देवता - **अग्निः**।। छन्दः **निचृज्जगती**।।

शब्दार्थ- अग्ने = हे अग्ने! तू **दक्षैः** = बलों से **सुदक्षः** = शुभ बलवाला, **क्रतुना** = कर्म से **सुक्रतु** = शोभन कर्मवाला **असि** = है और **काव्येन** = अपने काव्य से **विश्ववित् कविः** = सर्वज्ञ कवि **असि** = है। **वसूनाम् वसुः** = वसुओं का भी वसु (वासक), धनों का धन होकर, **यानि** = जिन ऐश्वयों को **द्यावा च पृथिवी च** = सम्पूर्ण द्युलोक और पृथिवीलोक **पुष्यतः** = उपजाते है, बढ़ाते हैं उन सब ऐश्वर्यों को **त्वम्** = तू **एकः इत्** = अकेला ही **क्षयसि** = अपने में बसाता है।

विनय- हे परम् अग्ने! हे परमेश्वर! इस जगत् की जगत् की नानाविध अग्नियों से जो नाना प्रकार के बल प्रकट हो रहे हैं, वे सब असल में तेरे ही बल हैं। भेद इतना है कि इनके ये अपूर्ण बल तो बहुत बार दूषित बल होते हैं, पर इनके मूल में रहने वाला तू सदा परिपूर्ण बली और शोभन बली है। इसी प्रकार जगत् की भौतिक-अभौतिक अग्नियों द्वारा जो निरन्तर अनगिनत क्रियाएं और चेष्टाएं की जा रही हैं वे भी असल में तुझ सुक्रतु से, तुझ शोभनकर्मा से ही प्रवाहित हो रही हैं। तुझसे तो ये सब कर्मप्रवाह निर्मलरूप से ही निकल रहे हैं, किन्तु आगे चलकर ये नाना प्रकार से मलिन और दूषित हो जाते हैं और जगत् में जो बहुत-सी आत्माग्नियां, जनाग्नियां अपने थोड़े-बहुत ज्ञान से, क्रान्तदर्शी ज्ञान से, कवित्व से प्रकाशित हो रही हैं उनका भी कारण तू ही परिपूर्ण और सर्वज्ञ कवि है। संसार के ऊंचे-से-ऊंचे कवि-ज्ञानी तेरे ही अक्षय-नित्य काव्य से, तेरे ही ज्ञान-महाग्नि से चिनगारियां प्राप्त करके चमक रहे हैं। यही नहीं, किन्तु सब वसुओं का वसु, सब धनों का धन तू ही है। इस सम्पूर्ण द्यावापृथिवी में जो वसु, जो ऐश्वर्य उपजते हैं-द्युलोक के ऊंचे-से-ऊंचे अकल्पनीय, आध्यात्मिक ऐश्वर्य तथा भूलोक के सब भौतिक ऐश्वर्य-ये सब तुझ में ही निवास करते हैं। इन वसुओं का वासक-एकमात्र वासक-तू ही है। हम नासमझी से समझते है कि ऐश्वर्य उस-उस लोक के हैं, किसी और के हैं। अब वास्तविक तथ्य को जानकर हे सब बलों से सुबली! हे सब कर्मों के शोभन आधार! हे परमकवि! हे सब रत्नों के भण्डार! तुम्हें हमारा बार-बार नमस्कार है।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

धर्म को खतरा किससे?

....एक बार फिर दावा किया जा रहा है कि बाबा की इस करतूत से पूरी संत बिरादरी कलंकित हो गई हालाँकि सच्चे साधुओं के बीच फर्जी आदमी का मिलना कोई बड़ी बात नहीं है। इसमें सालाना तीन चार बड़े बाबा और छमाही तिमाही कुछ छोटे बाबा दसवें पंद्रहवें दिन छोटे मोटे बाबाओं पुजारियों का पकड़े जाना आम बात हो चुकी है। यह बात अकेले किसी एक पंथ-धर्म या मजहब की नहीं है। .....

हर बार कथित बाबाओं का एक नया मामला उजागर होता है जिसके बाद धर्मधरा में बवाल मचता है। स्थिति कुछ दिन बाद सामान्य हो जाती है। पुराने बाबा की जगह नया बाबा आ जाता है और भक्ति का कारोबार ज्यों का त्यों चलता रहता है। भक्त भक्ति-भाव में डूबकर अपने-अपने बाबाओं के कसीदे पढ़ते रहते हैं। एक बार फिर दिल्ली के फतेहपुर बेरी इलाके में मशहूर शनिधाम मंदिर के संस्थापक दाती महाराज के खिलाफ उनकी शिष्या ने रेप का सनसनीखेज आरोप लगाया है। दिल्ली पुलिस ने पीड़िता की शिकायत पर दुष्कर्म का केस दर्ज किया गया है। यदि पैसे तथा पहुँच का खेल न चला तो एक और बाबा का सलाखों के पीछे जाना तय माना जा रहा है।

एक बार फिर दावा किया जा रहा है कि बाबा की इस करतूत से पूरी संत बिरादरी कलंकित हो गई हालाँकि सच्चे साधुओं के बीच फर्जी आदमी का मिलना कोई बड़ी बात नहीं है। इसमें सालाना तीन चार बड़े बाबा और छमाही तिमाही कुछ छोटे बाबा दसवें पंद्रहवें दिन छोटे मोटे बाबाओं पुजारियों का पकड़े जाना आम बात हो चुकी है। ये बात अकेले किसी एक पंथ-धर्म या मजहब की नहीं है। किसी न किसी पंथ में कोई न कोई कथित धर्मिक गुरु के पकड़े जाने की खबर अखबारों से मिलती रहती है। ऐसी खबरों के सार्वजनिक होने के बाद देश और धर्म कई बार जगहंसाई झेल चुका है।

ऐसा लगता है जैसे आम भारतीय को जीने के लिए धर्म और राजनीति की खुराक चाहिए। जिसके लिए आज ऐसे मध्यस्थों की जरूरत समझे बैठे हैं यानि कि धर्म को ऐसे बिचौलियों की जरूरत इसलिए आन पड़ी है ताकि वे आम लोगों और भगवान तथा भक्तों के बीच पुल का काम कर सकें। शायद ही कोई धर्म इन प्रवृत्तियों से परे रह पाया है। धर्म के नाम पर व्यापार करने और पैसा ऐंठने के आरोप तो बीते जमाने की बात हो गई। यहां तक कि प्रतिष्ठित गद्दियों पर बैठे, मठों और डेरों के मालिकों का चरित्र भी इन छींटों से नहीं बच पाया। ऐसे में आस्तिक मन पूछता है कि किस देहरी पर शीश झुकाएं और किससे अपना पीछा छुड़ाएं।

आखिर क्यों अचानक से ये धार्मिक शिक्षाओं, भक्ति भावना से भरे मन, वासना के कुण्ड बनते जा रहे हैं। इन्हीं वासनाओं से बचने के लिए लोग इनकी शरण में जाते रहे हैं लेकिन अब ये देहरी भी सुरक्षित नहीं है। लोग किसकी शरण में जाएँ? एक तो पहले से देश में धर्मनिरपेक्षता की महामारी फैल रही है जिसमें सभी धर्मगुरुओं को नीचा दिखाए जाने का कार्य चल रहा है। ऐसे में धर्मगुरुओं को अपने कार्यो को लेकर नए सिरे से आत्म निरीक्षण इसलिए जरूरी कि वे जागरूकता और आधुनिकता के इस माहौल में स्वयं तथा धार्मिकता को मजबूत कर सकें।

कोई महर्षि विश्वामित्र और मेनका के पौराणिक प्रसंग तथा अन्य संन्यासियों के प्रेम में पड़ने की बहुत-सी पौराणिक कथाएं लेकर स्वयं का बचाव करते दिखता है। कहते हैं हमें जबरन फंसाया जा रहा है। जबकि देश में ऐसे उदाहरण है जो विश्व के धर्म जगत के किसी अन्य कोने में नहीं मिलेंगे। जब मथुरा में महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती अंधविश्वास पर हमला करते तथा उनके विरोधी हारते थे। तब वे विरोधी एक महिला के पास गए, उससे बोले, ''तुझे बहुत से आभूषण देंगे, तू दयानन्द के पास जाकर शोर मचा देना कि इसने मुझे छेड़ा है।'' हम निकट ही छिपे रहेंगे, बाहर निकलकर डंडे से उसे अधमरा कर देंगे। महिला ने ये बात मान ली। अपने आप को खूब सजाकर वहाँ गई, जहाँ स्वामी जी बैठे थे, ध्यान में मग्न थे, स्वामी दयानन्द ने आँखें खोली, बोले, ''माँ तुम कौन हो?'' माँ शब्द सुनते ही उसकी आँखें डबडबा गयीं और सिसकते हुए बोली माफी मांगने आई हूँ महात्मा जी। इन आभूषणों ने मुझे अँधा कर दिया था और रोते हुए उसने सारी कथा महर्षि को सुनाई दी।

दूसरा उदाहरण स्वामी विवेकानंद जी का भी है जब एक विदेशी महिला ने उनसे शादी करने का प्रस्ताव रखते हुए कहा था कि मुझे आपके जैसा ही एक पुत्र चाहिए जो पूरी दुनिया में मेरा नाम रोशन करे और वह केवल आपसे शादी करके ही मिल सकता है, तब विवेकानंद ने मुस्कुराते हुए कहा था आप मुझे ही अपना पुत्र मान लीजिये और आप मेरी माँ बन जाइए ऐसे में आपको मेरे जैसा पुत्र भी मिल जाएगा और मुझे अपना ब्रह्मचर्य भी नहीं तोड़ना पड़ेगा।

लेकिन आज के अधिकांश साधु संतों की जीवन शैली इस सबसे इतर चुकी है, धर्म की आड़ में वासना की पूर्ति, भक्तों की संख्या बढ़ाने, अपने आश्रम और मठों को भव्य बनाने में लगे हुए हैं। इन तथाकथित बाबाओं के व्यवहार को देखकर दुख होता है कि इन्होंने धर्म का महासत्यानाश कर दिया है। कोई इन्हें रोकने वाला नहीं है, क्योंकि भक्तों की बड़ी फौज इनके पास है। इनकी अजीब तरह की हरकतों को देखकर लगता है कि कौन विश्वास करेगा धर्म पर?

हाल के वर्षो में जिस तरह से कई छोटे-बड़े, असली-नकली यानी हर किस्म के बाबा विवादों में घिरे हैं, उससे खटका होने लगा है कि कहीं हम अधर्मयुग की देहरी पर पांव तो नहीं रख रहे हैं। जमीन पर अवैध कब्जा, हत्या, अप्राकृतिक यौन संबंध से लेकर वैश्यावृत्ति का रैकेट चलाने सरीखे गंभीर आरोप धर्म गुरुओं पर लग चुके हैं। इसके बावजूद भी जनता हर किसी को अपना गुरु मानकर उससे दीक्षा लेकर उसका बड़ा-सा फोटो घर में लगाकर उसकी पूजा करती दिख रही है। अपने महापुरुषों के फोटो भले ही त्योहारों में साफ करते हों लेकिन अपने तथाकथित गुरु का लॉकेट गले में पहनते हैं। यह धर्म का अपमान और पतन ही माना जाएगा। जब समाज में एक आम आदमी रेप जैसे कृत्य को अंजाम देता है तब समाज की शिक्षा पर सवाल खड़ें होते हैं लेकिन जब धर्म से जुड़े लोग ऐसे कार्य करें तो क्या धर्म बदनाम नहीं होता, धर्म की शिक्षा बदनाम नहीं होती? इसे समझने का प्रयास कीजिये; नुकसान किसका है और सुधार की जिम्मेदारी किसकी है?

- सम्पादक

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• **प्रचार संस्करण** (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• **विशेष संस्करण** (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• **स्थूलाक्षर सजिल्द** 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

प्रथम पृष्ठ का शेष

संन्यासी स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती जन्म शताब्दी .....

उन्होंने विश्व पुस्तक मेले का संस्मरण सुनाते हुए कहा कि मैं और मेरे एक अन्य मित्र और स्वामी जी दिल्ली के विश्व पुस्तक मेले में गये वहां से कुछ पुस्तकें खरीदीं उन सारी पुस्तकों की पेमेंट स्वामी जी ने की। मेले से निकलकर हम लोग बस के इन्तजार में काफी देर से खड़े हाथों में पुस्तकों के थैले थे वजन अधिक था सो हम लोगों ने वे थैले सड़क की रेलिंग जिसमें शूल से बने थे उन पर टांग दिया जैसे ही थैले टांगे कि बस आ गयी और हम सब बस में चढ़ गये। कुछ दूर जाने पर मेरी निगाह स्वामी जी के हाथ पर तथा अपने साथी के हाथ पर गई तो देखा थैले किसी के पास नहीं थे। मैंने स्वामी जी से कहा थैले वहीं टंगे रह गये अब तो सारी पुस्तकें गयीं! स्वामी जी अगले स्टाप पर उतर गये हम लोग भी उतर गये बोले जाओ जवानों भाग कर जाओ थैले वहीं मिलेंगे। हमने कहा स्वामी जी दिल्ली में थैले अब वहां कहां मिलेंगे। स्वामी बोले पुस्तकों की पेमेन्ट मैंने की है मेरी कमाई ईमानदारी की है। अगर मेरी कमाई ईमानदारी की होगी तो थैले वहीं मिलेंगे। हम दोनों वहां गये तो वास्तव में थैले वैसे के वैसे ही वहां रेलिंग पर टंगे थे। ये विश्वास था स्वामी जी को अपने ऊपर।'

समारोह के मुख्य अतिथि श्री योगेश मुंजाल जी ने स्वामी जी के संस्मरणों को सुनाते हुए कहा, 'स्वामी जी गलत यज्ञ विधियों को जरा भी स्वीकार नहीं करते थे व कहा करते थे कि केवल समिधाओं को होम करना ही यज्ञ नहीं है यदि व्यक्ति के अन्दर नम्रता, प्यार करने, झुकने की और दूसरों की सहायता करने की भावना हो तो यह भी यज्ञ हैं जो सबसे अधिक प्रभावी होते हैं। श्री मुंजाल जी ने बताया कि उन्होंने अपनी सभी फैक्ट्रियों की आधार शिला स्वामी जी से ही रखवाई। उन्होंने कहा कि स्वामी जी को सच्ची श्रद्धांजलि तब होगी जब उनके द्वारा स्थापित शोध संस्थान में शोधकार्य किये जाएं, उनके द्वारा लिखित पुस्तकों का प्रकाशन किया जाए संस्थान गतिशील हो तथा उनके अधूरे कामों को पूरा किया जाए।'

समारोह अध्यक्ष स्वामी प्रणवानन्द जी ने अपने वक्तव्य में कहा 'स्वामी जी कहा करते थे कि व्यक्ति के अन्दर 5 गुण होना आवश्यक है। 1 आप वस्त्र भले ही कैसे भी पहने पर साफ-सुथरे हो जो आपको शोभायमान हों, 2 व्यक्ति की वाणी मधुर हो क्योंकि बच्चे का जब अन्नप्राशन होता है तो उसकी जिव्हा पर सोने की शलाखा से ओम लिखा जाता है, इसका तात्पर्य यही होता है कि वह बालक हमेशा मधुर बोले। 3 व्यक्ति की वार्तालाप शिष्ट होनी चाहिए। 4 व्यक्ति को विद्यावान होना चाहिए और 5 वां गुण व्यक्ति का स्वभाव विनयी होना चाहिए। हम समाज में ऐसे प्रेरणाप्रद कार्य करें जिससे हम लोगों के लिए भी स्वामी जी की तरह प्रेरणा स्रोत बनें।'

महाशय धर्मपाल जी ने अपने उद्बोधन में कहा 'बच्छों वाली समाज हुआ करती थी लेकिन काम बड़े-बड़े किया करती थी। आप भी बड़े-बड़े काम करते रहें। आर्य समाज के लिए मेरा योगदान हमेशा रहेगा। उन्होने कहा कि स्वामी जी के अधूरे कार्यों को पूरा करना हम सबका दायित्व है, हम सबको उनके पद्चिह्नों पर चलते हुए कार्य करना चाहिए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा महामंत्री श्री विनय आर्य ने स्वामी जी का संस्मरण सुनाते हुए कहा कि आर्य समाज मिण्टो रोड, सरकार की ओर से तोड़ा जा रहा था। किसी तरह स्वामी जी को खबर दी गयी, उन्होंने कहा मैं अभी पहुंचा और कुछ ही देर में स्वामी जी जोकि काफी दूर यज्ञ करा रहे थे मिण्टोरोड पहुंचे और यज्ञ करने लगे और फिर जो परिणाम हुआ आज आप सबके सामने है।' श्री विनय आर्य ने आगे बताया कि 'आज जबकि दिल्ली में आर्य महासम्मेलन-2018 होने जा रहा है, स्वामी जी की कमी बहुत प्रतीत हो रही है, आज हमें यह सोचना पड़ रहा है कि महासम्मेलन में यज्ञ ब्रह्मा का निवेदन किसको किया जाए।'

डॉ. गणेश दत्त जी ने संस्मरणों की श्रृंखला को आगे बढ़ाते हुए कहा कि हम-सबको ईश्वर को बधाई देनी चाहिए कि उसने हमें भारत भूमि पर जन्म दिया। दूसरा सौभाग्य यह है कि हम आर्य समाज से जुड़े हैं, आर्य समाज से जुड़े यानी स्वामी दीक्षानन्द जी से जुड़े, स्वामी दीक्षानन्द से जुड़े अर्थात् स्वामी दयानन्द सरस्वती जी से जुड़े, स्वामी दयानन्द जी से जुड़े तो हम वेदों से जुड़े हैं, वेदों के जुड़े हैं यानी विद्या से जुड़े हैं।' उन्होंने कहा कि स्वामी जी कोई व्यक्ति नहीं थे वे एक संस्था थे। आज हम यहां स्वामी जी को श्रद्धांजलि देने के लिए एकत्र हुए हैं जबकि हम सब उन्हें शब्दांजलि दे रहे हैं, स्वामी जी के प्रति अपने भाव प्रकट कर रहे हैं तो भावांजलि है, गीत गा रहे हैं तो गीतांजलि है। श्रद्धांजलि कहते हैं किसी के जीवन के सत्य को, उसके आदर्शों को अंजुली में लेकर अर्पण करना।

श्री नवीन रहेजा जी ने अनुरोध किया कि यदि किसी के पास स्वामी जी द्वारा कोई प्रकाशन हो तो उसे मैं व हमारा परिवार प्रकाशित करावा कर उनके अधूरे कार्यों को पूर्ण करने का प्रयास करूंगा। समर्पण शोध संस्थान की ओर से स्वामी जी पर बनाया गया वृत्तचित्र का प्रदर्शन किया गया।

समारोह का शुभारम्भ डॉ. धर्मेन्द्र शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ से किया गया। इस अवसर पर श्रीमती साधना व कर्नल रवि भटनागर, श्रीमती प्रभा निर्मल व श्री वेद भूषण, श्रीमती एवं श्री डॉ. कृष्ण लाल तथा श्रीमती व श्री शशिकान्त भण्डारी यजमान बने। पं. सत्यपाल पथिक जी के सानिंध्य में यज्ञ सम्पन्न हुआ।

मंचीय कार्यक्रम का शुभारम्भ श्रीमती सुकृति व श्री अविरल माथुर ने अपने सहयोगी श्री दीपक व श्री कुलविन्दिर के सहयोग से मधुर संगीत के साथ वेदऋचाओं के अनुरूप प्रेरणाप्रद व कर्णप्रिय भजन प्रस्तुत किए जिनसे सभी आर्यजन मंत्र मुग्ध हो गए। तदुपरान्त पं. सत्यपाल पथिक जी ने स्वामी दीक्षानन्द जी के संस्मरण सुनाते हुए एक भजन 'ऋषि की कहानी सितारों से पूछो....' प्रस्तुत किया। सुसज्जित मंच पर सभा अध्यक्ष स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी विवेकानन्द जी (गुरुकुल प्रभात आश्रम) महाशय धर्मपाल (चेयरमैन एम.डी.एच), श्री योगेश मुंजाल (म. डायरेक्टर मुंजाल शोवा लि.), श्री रामनाथ सहगल, श्री अजय सहगल, डॉ. गणेश दत्त, श्री दर्शन

- शेष पृष्ठ 5 पर

क्रान्तिकारियों की कथा

आंधियां चलती रहीं, आशियां बनते रहे

गतांक से आगे -

रात का मेहमान : भारतीय क्रान्तिकारियों ने 9 अगस्त, 1925 की रात लखनऊ के निकट काकोरी में 8 डाउन ट्रेन से जाता हुआ सरकारी खज़ाना लूटा। इस घटना से ब्रिटिश सरकार काँप उठी। क्रान्तिकारियों को पकड़ने के लिए गुप्तचरों को आदेश मिले। एक के बाद दूसरा क्रान्तिकारी ब्रिटिश गुप्तचरों का शिकार होता ही गया। किन्तु उनके सेनापति चन्द्रशेखर आज़ाद फ़रार थे और ब्रिटिश शासन से डटकर लोहा ले रहे थे। तभी की दास्तान है:

फरवरी 1930 का प्रथम सप्ताह। खूब जाड़ा पड़ रहा था। बारिश भी तेज़ थी। रात दस बजे लखनऊ चारबाग़ रेलवे स्टेशन पर यात्रियों से अधिक पुलिस वाले थे, लेकिन दिखाई दे रहे थे केवल चार-छह ही। बाक़ी सब सादे लिबास में थे। ठीक सवा दस बजे देहरादूर एक्सप्रेस प्लेटफ़ार्म नम्बर 1 पर आकर रुकी। मुख़बिर ने सूचना दी थी कि आज़ाद इसी गाड़ी से बनारस जाएँगे। उन्हें बीच ही में धर दबोचने के इरादे से पुलिस वालों ने गाड़ी का एक-एक डिब्बा छान मारा किन्तु चन्द्रशेखर आज़ाद का पता कहीं न चला। गाड़ी छूटने से कुछ पहले एक गुप्तचर दौड़ता हुआ अपने अफ़सर के पास पहुँचा और हाँफते हुए बोला कि आज़ाद तो एक साहब-बहादुर के वेश में बाहर निकल गए। इंस्पेक्टर के चौंकने पर उसने गेट से लाया प्रथम श्रेणी का एक टिकट भी उनके आगे बढ़ा दिया, जो देहरादून से बनारस तक का था। पुलिस को चकमा देने के इरादे से आज़ाद बीच में ही उतर पड़े थे। टिकट के पीछे हिन्दी में लिखा था, ''मुझे जीवित पकड़ सकना असम्भव है-आज़ाद।'' अब, अफ़सर को काटो तो ख़ून नहीं। फ़ौरन सबको इकट्ठा करके आज़ाद का पीछा करने की ठानी।

हाथ में अटैची लिए आज़ाद खरामा-खरामा चलकर लाटूश रोड पर आए। तभी उन्होंने पीछे मुड़कर देखा-पुलिस के बहुत-से जवान दौड़ते हुए उसी ओर आ रहे हैं। बाँस मंडी चौराहे से वे तुरन्त लाल कुएँ की ओर मुड़े और चलने की रफ़्तार भी तेज कर दी। फिर ह्वीवेट रोड पर आते-आते एक संकरी गली में मुड़े। तीन-चार मकान छोड़कर सहसा उनके हाथ की थपकियां दाहिनी ओर के दरवाज़े पर पड़ने लगीं। क्षण-भर में एक वृद्धा ने कुंडी खोलते हुए पूछा, ''कौन?''

''बहुत भीग गया हूँ। बारिश थमने तक शरण चाहता हूँ।'' टिमटिमाते हुए दिये की रोशनी आज़ाद के चेहरे पर पड़ी।

- क्रमश:

- धर्मेन्द्र गौड़ : साभार :
क्रान्तिकारी आन्दोलन के अधखुले पन्ने

क्रान्तिकारी आन्दोलन के अधखुले पन्ने : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्त करने के लिए मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन -2018 दिल्ली में

वानप्रस्थ और संन्यास-दीक्षा

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली-2018 में इस बार भी गत सम्मेलन की भांति वानप्रस्थ और संन्यास की दीक्षा के लिए निःशुल्क वानप्रस्थ और संन्यास की दीक्षा का भव्य कार्यक्रम आयोजित होगा। जो आर्य महानुभाव इस अवसर पर आर्यजगत् के मूर्धन्य संन्यसी वैदिक विद्वानों से वानप्रस्थ अथवा संन्यास की दीक्षा लेना चाहते हों, इस कार्यक्रम में सादर आमन्त्रित हैं।

दीक्षा के इच्छुक महानुभाव कृपया अपना विवरण **'संयोजक, यज्ञ समिति'** के नाम **सम्मेलन कार्यालय - 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001** के पते पर भेजें, ताकि उनके संस्कार की समस्त व्यवस्था बनाई जा सके।

महासम्मेलन आयोजन समिति इस कार्यक्रम को विशेष प्रकार से आयोजित करेगी।

- महासम्मेलन संयोजक

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन
25, 26, 27, 28 अक्टूबर 2018

सम्मेलन स्थल :- स्वर्ण जयंती पार्क, रोहिणी, सैक्टर-10, दिल्ली-85

विश्व शान्ति यज्ञ, योग व तपोनिष्ठ संन्यासियों, वैदिक विद्वानों द्वारा सत्संग तथा प्रवचन का लाभ उठाने हेतु लाखों की संख्या में भाग लेकर कार्यक्रम को सफल बनायें।

सम्मेलन कार्यालय : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1 दूरभाष : 9540029044

E-mail : aryasabha@yahoo.com, Website : www.aryamahasammelan.org, www.thearyasamaj.org

YouTube : thearyasamaj 9540045898

प्रचार एवं तैयारियों के लिए प्रान्तीय स्तर आयोजित बैठकें

समस्त आर्यसमाजों, गुरुकुलों, आर्य शिक्षण संस्थानों, आर्य वीर दल, वीरांगना दल एवं सहयोगी संस्थाओं के अधिकारी अधिकाधिक संख्या में भाग लें

महाराष्ट आर्य प्रतिनिधि सभा

रविवार 24 जून, 2018

स्थान : आर्यसमाज औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

-: निवेदक :-

डॉ. ब्रह्ममुनि (प्रधान), माधवराव देशपांडे (मन्त्री), दयाराम बसैये (उप प्रधान)

केन्द्रीय आर्यसमाज नेपाल

शनिवार 30 जून, 2018

माहेश्वरी सदन, मालापृच्छे मार्ग, काठमांडु

-: निवेदक :-

कमलाकान्त आत्रे (अध्यक्ष), माधव प्रसाद उपाध्याय (का. अध्यक्ष)

आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल : 1 जुलाई, 2018

प्रात:काल — आर्यसमाज बड़ा बाजार, कोलकाता

सायं:काल — आर्यसमाज सिलीगुड़ी

-: निवेदक :-

दीनदयाल गुप्ता (प्रधान), जगदीश प्रसाद केडिया (मन्त्री)

प्रचार हेतु शोभायात्रा/प्रभातफेरी आयोजित करें

समस्त आर्य समाजों, आर्य विद्यालयों, गुरुकुलों एवं अन्य सहयोगी संस्थानों के पदाधिकारियों से निवेदन है कि अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2018 के अवसर पर सम्मेलन से चार दिन पूर्व अपने प्रतिदिन अपने-अपने क्षेत्रों में सम्मेलन के प्रचार एवं जन साधारण को आमन्त्रित करने पधारने की प्रेरणा देने के लिए प्रात:काल अथवा सायंकाल जैसा आप उचित समझें शोभायात्राएं/प्रभातफेरियां आयोजित करें, जिससे जन साधारण में जानने की उत्सुकता तथा जागृति का संचार हो।

कृपया अपनी प्रचारयात्रा/शोभायात्रा/प्रभातफेरी का विवरण तिथि, समय, स्थान, रूट आदि की जानकारी सम्मेलन कार्यालय को अवश्य भेजें, जिससे आर्यसन्देश साप्ताहिक में प्रकाशित किया जा सके। - *संयोजक*

आर्यसमाज झापा (नेपाल)

सोमवार 2 जुलाई, 2018

स्थान : आर्यसमाज झापा

-: निवेदक :-

नित्यानन्द वशिष्ठ (अध्यक्ष), नारायण उप्रेती (सचिव)

आओ जानें ! सत्य? असत्य? आओ पढ़ें ! सत्यार्थ प्रकाश

भव्य स्मारिका का प्रकाशन

सभी आर्य समाजें व आर्य संस्थाएँ विज्ञापन अवश्य भेजें

यदि आप सम्मेलन के अवसर पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका में विज्ञापन रूप में अपनी आर्यसमाज / संस्था की विशेष गतिविधियों का विवरण प्रकाशित करना चाहते है, जिससे आर्यसमाज के इतिहास में आपकी संस्था का नाम अंकित हो। स्मारिका 15 अक्टूबर तक तैयार हो जायेगी और 23×36×8 साइज में प्रकाशित होगी। पूरे पृष्ठ का विज्ञापन साइज 7.5"×10" का एवं आधे पृष्ठ का साइज 7.5"×5" होगा। आप अपना चैक/ड्राफ्ट **"दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा - महासम्मेलन-2018"** के नाम केवल खाते में उक्त पते पर भिजवाकर कृतार्थ करें। विज्ञापन सामग्री एवं डिजाईन हमें 30 सितम्बर 2018 तक अवश्य भिजवा दें। दरें निम्न प्रकार हैं -

(श्वेत श्याम विज्ञापन)		(रंगीन- चार रंगों में विज्ञापन)	
1. चौथाई पृष्ठ	5000/-	4. चौथाई पृष्ठ	7500/-
2. आधा पृष्ठ	7500/-	5. आधा पृष्ठ	12500/-
3. पूरा पृष्ठ	10000/-	5. पूरा पृष्ठ	21000/-

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली-2018

25-26-27-28 अक्टूबर, 2018

तद्नुसार कार्तिक कृष्ण १, २, ३, ४ विक्रमी २०७५

स्थान : स्वर्ण जयन्ती पार्क, सै. 10, रोहिणी, दिल्ली

दिल खोलकर सहयोग करें

अक्टूबर-2018 में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन अपने आप में बहुत बड़ा सम्मेलन होगा। सम्पूर्ण विश्व से 2 लाख से अधिक आर्य जनों के इसमें पहुँचने की आशा है। इसे देखते हुए सम्मेलन की सभी व्यवस्थाओं एवं सुविधाओं के लिए आप सबका आर्थिक सहयोग सादर अपेक्षित है। सभी आर्यजनों, आर्य संस्थाओं, आर्य समूहों, प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं और आर्य महिला सभाओं/संस्थाओं से निवेदन है कि अपनी सहयोग राशि चैक/बैंक ड्राफ्ट **"दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा-महासम्मेलन-2018"** के नाम बनाकर भेजने की कृपा करें। यह सम्मेलन आप का है और आप के सहयोग से ही यह हर प्रकार से अद्वितीय बन सकता है। कृपया अपनी सहयोग राशि **'संयोजक'** के नाम **'अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001'** के पते पर भेजें। **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया समस्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत आयकर छूट प्राप्त है।**

-: निवेदक :-

धर्मपाल आर्य

संयोजक, महासम्मेलन एवं प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन- दिल्ली : 25-28 अक्तूबर, 2018

सहयोगी युवा आर्य कार्यकर्ताओं का स्वागत है

इस बार के आर्य महासम्मेलन का एक उद्देश्य आर्य समाज में युवाओं की भागीदारी को बढ़ाने को लेकर भी है। जो युवा इस महासम्मेलन में अपना सहयोग देना चाहते हैं, उनको हम सादर आमन्त्रित करते हैं। इतने विशाल सम्मेलन की व्यवस्था को सुव्यस्थित बनाए रखना युवाओं के बिना सम्भव नहीं है। अत: जो युवा आर्य कार्यकर्तागण सम्मेलन की व्यवस्थाओं में सहयोग करने के इच्छुक हों और 23 अक्तूबर से 30 अक्तूबर तक सेवा देना चाहते हों वे अपनी आर्यसमाज/प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के माध्यम से अपने नाम, पता एवं मोबाइल नं. सहित सम्पूर्ण विवरण **'संयोजक'** के नाम सम्मेलन कार्यालय : आर्यसमाज, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवाने का कष्ट करें।- ***संयोजक***

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2018, दिल्ली

भाग लेने के लिए अभी से रेलवे आरक्षण कराएं

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2018 दिल्ली में भाग लेने हेतु दिल्ली आने वाले सभी आर्य महानुभाव अविलम्ब अपना रेल आरक्षण जिस भी रेल में मिले करा लें। ऐसा न हो कि देर होने के कारण आप को टिकट ही न मिले और आप महासम्मेलन में भाग लेने से वंचित हो जाएँ। जहां तक रेलवे छूट का प्रश्न है वहां 60 वर्ष से अधिक आयु के पुरुषों एवं 58 वर्ष से अधिक आयु की महिलाओं को रेलवे में छूट का प्रावधान पहले से ही है, जिसके छूट का लाभ लेते हुए अभी से आरक्षण करा लेना चाहिए। जन-साधारण के लिए रेलवे विभाग से किराया भाड़ा छूट प्रदान करने का निवेदन किया गया है। आशा है शीघ्र ही किराया भाड़ा छूट प्रमाण पत्र शीघ्र ही प्राप्त होगा। - ***संयोजक***

कॉलर ट्यून से करें महासम्मेलन का आह्वान 'विश्वमार्यम् का फिर से उद्घोष करें'

आर्यमहासम्मेलन गीत 'विश्वमार्यम् का फिर से उद्घोष करें' को अपने मोबाइल की कॉलर/रिंग टोन बनाएं।

अपने मोबाईल में सम्मेलन गीत की ट्यून सैट करने हेतु दिए गए कोड को मैसेज करें अथवा निम्न लिंक पर क्लिक करें-

airtel	Airtel	DIAL 5432116538214	Idea	Idea	DIAL 5678910497215
Reliance	SetTune	SMS CT 10497215 to 51234	BSNL East & South	BSNL E & S	SMS BT 10497215 to 56700
BSNL North & West	BSNL N & W	SMS BT 7104896 to 56700	AIRCEL	Aircel	SMS DT 7104896 to 53000
vodafone	Vodafone	SMS CT 10497215 to 56789	MTNL	MTNL	SMS PT 10497215 to 56789
TATA	TATA	SMS CT 10497215 to 543211			

http://mobilemanoranjan.com/Hindi/Album/Arya-Udghosh

महासम्मेलन की कॉलर ट्यन को सीधे किसी भी सर्च इंजन में bit.ly/2t7kRqr टाइप करके डाउनलोड भी किया जा सकता है।

पृष्ठ 3 का शेष

अग्निहोत्री (वैदिक साधना आश्रम), श्री नवीन रहेजा (रहेजा बिल्डर्स), आचार्य डॉ. वागीश जी, श्री आर्य तपस्वीजी, कर्नल डॉ. रवि भटनागर, श्री सतीश चड्डा, डॉ. धर्मेन्द्र जी व ब्रह्मचारियों (अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ) द्वारा मंत्रोच्चारण के साथ दीप प्रज्ज्वलन किया। सभी मंचासीन महानुभावों ने जन्म शताब्दी समारोह पर आधारित स्मारिका का विमोचन किया व सभी को स्वामी जी का स्मृति चित्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

महाशय धर्मपाल जी, श्री योगेश मुंजाल जी, श्री राम नाथ सहगल श्री अजय सहगल, श्री नवीन रहेजा, श्री दर्शन अग्निहोत्री, पं. सत्यपाल पथिक जी, आचार्य डॉ. वागीश जी, डॉ. गणेश दत्त जी, डॉ. धर्मेन्द्र शास्त्री, श्री धर्मपाल आर्य प्रधान, श्री विनय आर्य, महामंत्री, श्री ओम प्रकाश आर्य, उपप्रधान, श्री शिव कुमार मदान, उपप्रधान , श्री विद्यामित्र ठुकराल, कोषाध्यक्ष, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, श्रीमती प्रेमलता भटनागर, श्री आर्य तपस्वी, श्री ओम प्रकाश यजुर्वेदी प्रधान व श्री बलदेव सचदेवा प्रधान, पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल, श्री कन्हैया लाल, उपप्रधान हरियाणा सभा, श्री हरिओम बंसल, मंत्री श्री एस.पी सिंह मंत्री, श्री सतीश चड्डा, महामंत्री, श्री अरुण प्रकाश वर्मा कोषाध्यक्ष, आर्य केन्द्रीय सभा, श्री सुनहरी लाल यादव व श्री चतर सिंह नागर, मंत्री, वेद प्रचार मण्डल, श्री यज्ञ देव शास्त्री, श्री यशपाल शास्त्री (हल्द्वानी), श्री वेद प्रकाश शास्त्री (साहिबाबाद) का सम्मान किया गया। मंच संचालन श्री सतीश चड्डा, श्री रमेश भटनागर, श्री राकेश भटनागर ने किया।

ब्र. प्रमोद (प्रथम), ब्र. मनीष (द्वितीय)तथा ब्र. अवधेश (तृतीय) को वेद के कंठस्थ होने के कारण 'विद्यामर्णतण स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती' स्मृति पुरस्कार हेतु 25 हजार रुपये की राशि प्रदान की गई।

कार्यक्रम को सफल बनाने एवं व्यवस्थाओं को पूर्ण करने में श्री अरुण प्रकाश वर्मा, श्री एस. पी. सिंह, डॉ. मुकेश आर्य, श्री संदीप आर्य, श्री विपिन भल्ला जी, श्री बृजेश आर्य व श्रीमती हर्ष आर्य और प्रभा आर्य का विशेष सहयोग रहा। समारोह के अन्त में प्रीतिभोज का आनन्द लिया गया।

महाशय धर्मपाल जी का स्वागत साथ में हैं श्री रामनाथ सहगल, सभा प्रधान धर्मपाल आर्य एवं अन्य। श्री योगेश मुंजाल जी को स्मृति चिह्न भेंट करते दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य एवं स्वामी प्रणवानन्द जी। भव्य स्मारिका का लोकार्पण।

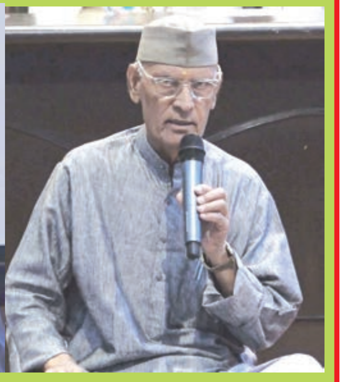

स्वामी दीक्षानन्द के संस्मरणों को याद करते श्री योगेश मुंजाल जी, श्री रमेश भटनागर एवं श्री राकेश भटनागर, श्री नवीन रहेजा जी एवं पं. सत्यपाल पथिक जी।

प्रथम पृष्ठ का शेष

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग बैठक सम्पन्न

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 की पूर्व तैयारियों की गतिविधियों को ध्यान में रखते हुए दिनांक 17 जून 2018 को आर्यसमाज 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली के सभागार में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग बैठक का आयोजन किया गया। बैठक की अध्यक्षता सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने की। बैठक का शुभारम्भ गायत्री मंत्र से किया गया। बैठक की कार्यवाही पूर्व (पिछली बैठक से वर्तमान समय) तक हुई समस्त दिवंगत आत्माओं की शान्ति के लिए दो मिनट का मौन रखा गया व सभा के कार्यों की समीक्षा की गई।

- ★ अन्तराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन- 2018 के विषय में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि महासम्मेलन के नाम से बैंक में अलग से खाता खोला जाए। '**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा-महासम्मेलन-2018**' के नाम से बैंक खाता खोलने का प्रस्ताव स्वीकार किया गया।
- ★ महासम्मेलन की स्वागत समिति के अध्यक्ष के रूप में महाशय धर्मपाल जी (चेयर मैन एम.डी. एच.) बैठक में पधारने पर स्वागत किया गया।
- ★ महासम्मेलन के लिए प्रत्येक कार्य को सुचारु रूप से सम्पादित करने के लिए अलग-अलग समितियों का गठन किये जाने का निर्णय सर्वसम्मति से लिया गया।
- ★ महासम्मेलन के लिए दिल्ली की स्वागत समिति का गठन किया गया। समिति में दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों के प्रधान महानुभावों को सदस्य के रूप में मनोनीत किया गया।
- ★ महासम्मेलन के लिए दिल्ली की व्यवस्था समिति का गठन किया गया। इस समिति में दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों में मन्त्री महोदयों को सदस्य के रूप में मनोनीत किया गया।
- ★ महासम्मेलन की केन्द्रीय संयोजक समिति का गठन किया गया।
- ★ स्वागत समिति के सदस्यों को यह निवेदन किया गया कि जिस प्रकार परिवार के किसी कार्यक्रम में पिता, भाई व दामाद का स्वागत होता है उसी प्रकार महासम्मेलन में सभी प्रतिनिधियों का स्वागत किया जाए।
- ★ महासम्मेलन के लिए अनुमानित 5 से 6 करोड़ के लगभग व्यय होने को देखते हुए 5.50 से 6 करोड़ रुपये के अनुमानित बजट को सर्वसम्मति से स्वीकृत प्रदान की गई।
- ★ महासम्मेलन के चलते टी.वी. के दो चैनलों से लाईव टैलीकास्ट कराने की व्यवस्था को सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया।

महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने कहा कि दिल्ली में आर्य महासम्मेलन को आयोजित करने की जिम्मेदारी सिर्फ दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ही नहीं वरन् दिल्ली के समस्त आर्य समाजों की है। सम्मेलन में आने वाले प्रतिनिधियों की सुख-सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए दिल्ली की समस्त समाजों से आग्रह है कि वे अपने-अपने समाजों की जन-सुविधाओं को व्यवस्थित व ठीक करवा लेवें।

सभी समाजें अपने यहां होने वाले दैनिक व साप्ताहिक सत्संगों में आने वाले सदस्यों को महासम्मेलन की विस्तृत जानकारी दें, उन्हें महासम्मेलन से सम्बन्धित पत्रक इत्यादि दें और जो आर्यजन महासम्मेलन में अपनी निःशुल्क सेवाएं देने के इच्छुक हों उनके नामों की लिस्ट तैयार करें।

श्री धर्मपाल आर्य जी ने कहा कि विदेशों से आने वाले अतिथियों का आभार समझते हुए हमें महासम्मेलन के कार्यों को अपने हाथ में लेना चाहिए। अच्छा हो कि 5-5 आर्य समाजों की बैठकें आयोजित करें जिसमें महिलाओं की विशेष भागीदारी हो। उनमें महासम्मेलन की तैयारियों की रूपरेखा तैयार करें।

★ यथाशीघ्र आयोजित की जाएगी दिल्ली में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन से सम्बन्धित एक बड़ी बैठक, सर्वसम्मति से लिया गया निर्णय।

★ महाशय धर्मपाल जी की ओर से प्रतिवर्ष 5 प्रमुख कार्यकर्ताओं के लिए एक लाख रुपये प्रति कार्यकर्ता देने की घोषणा की गई।

महासम्मेलन की पूर्व तैयारियों के चलते नेपाल के 5 क्षेत्रों में बैठकें आयोजित करने का निर्णय लिया गया। पाकिस्तान, बांगला देश और अन्य देशों में भी बड़े स्तर पर बैठकें आयोजित की जा रही हैं। जानकारी दी गई कि युगांडा में भी आर्य समाज की स्थापना हो गई है।

बांगला देश से 450 आर्य प्रतिनिधियों व भारत के सभी प्रान्तों से हजारों की संख्या में आर्य प्रतिनिधियों के आने की सम्भावना है।

बैठक का संचालन महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने किया।

Veda Prarthana - II
Regveda - 12/1

Dear God May We Become Fearless in Life

- Acharya Gyaneshwarya

यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु।
शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः।।
यजुर्वेद 36/22

Yato yatah samihase tato no abhyam kuru.
Sham nah kuru prajabhyo abhyam nah pashubhyah.
(Yajur Veda 36:22)

God exists everywhere in this vast universe and maintains it is an orderly fashion. There is no place in the universe where God is not actively involved and performing His works. In this mantra, we pray to God to help us overcome the many types of fears we have in our lives. Some of the fears arise because of other persons, others from various locales (physical surroundings or places), and still others from various events around us. Some of these fears are from real events while others are mental due to doubts, imaginary things, or uncertainties of life. Some of tese fears are so intense that they bother our minds day and night, and despite our best efforts, we are unable to forget or get rid of them. When we force our mind to concentrate on a different task, success is only temporary because suddenly within a very short time the same fears re-emerge in the mind. Dear God please help us overcome our fears and make us fearless, peaceful, and full of harmony.

Fear has become pervasive these days in some locales within many countries. People are afraid of the violence perpetrated by their own ruling authorities or the oppostion groups and the terrorists. Even in the so-called civilized or safe countries, considerable amount of violence exists so that in many homes, women are afraid of their husbands becanse of wife abuse/ neglect/beatings; children of their fathers due to child abuse/ neglect; elderrly parents of their chidren due to parental abuse/neglect; and brouthers/sisters of siblings of being deceived or cheated. In some communities, the fears have become so prevalent that neighbors are afraid of each other; and teachers of properly disciplining students for being wrongly reported to the headmaster or principal. Similarly, in some comunities buyers are afraid of being cheated by the shopkeepers; patients are afraid that their doctor will order unnecessary tests or prescribe unnecessary expensive medicines due to greed; and clients are fearful that their lawyer will make their case unnecessarily complex so that he/she can prolong the case and charge more fees. Even when a subordinate soldier deserves reprimand for negligence, a military officer is sometimes afraid of carrying out the punishment to avoid being accused of harsh treatment.

When there is lack of trust among people in a society, it leads to the establishment of a pervasive web of fear within the society. Once established, it then causes people to view others' even good intentions with mistrust, doubt or suspicion. These fears and doubts in turn are caused when in a society lying, deception, and lack of true justice become common. The root cause of all of the above stated maladies according to Vedic scriptures is called bhogechchha poorti which means the desire to gather more and more wealth by whatever means possible so that one can enjoy all types of creature comforts and physical pleasures in life. The fulfillment of such desires is attempted even if the means are wrong and sinful. Such a person gradually loses his/her mental ability to distinguish dharma (moral) from adharma (immoral); truth from falsehood; just from unjust; right from wrong and has only one goal bhogechchha poorti for the fulfilment of which the person becomes willinng to do the meanest, and even heinous deeds. All of this in turn gradually destroy a person's inner core (right mind and intellect), lead to a steady downfall, loss of inner peace, and creates a background of constant fear. When a large number of persons start to behave in the above stated manner in a society, and the authorities are either incapable of stopping them, or themselves are corrupt participants in such behavior, then a background of relentless fear and hopelessness become the prevailing norm of the society.

To eliminate this background of prevailing fear, the society as a whole should have faith in true God, the Master of the universe (including our immediate surroundings), who is Omnipresent, All Knowing and is watching everybody's actions. God's presence is not inolated to a temple, gurudwara, church or a mosque where most people pray. He is present in eery particle and place in the universe, Who observes and judges our deeds and rewards us appropriately based upon them.

To Be Continue....

मायापुरी क्षेत्र के आर्यमहानुभावों से अपील

दिल्ली के मायापुरी औद्योगिक क्षेत्र में लगभग 10 माह पूर्व से आर्य समाज की स्थापना हेतु कार्यवाही आरम्भ हो चुकी है। इसी क्रम में नये समाज की रविवारीय हवन यज्ञ प्रातः 8:30 से 9:30 बजे आयोजित किया जाता है। जो आर्य परिवार मायापुरी व आसपास के क्षेत्रों में रहते हैं उनसे आग्रह है कि वे प्रातःकालीन यज्ञ में अवश्य शामिल हों व नवीन आर्य समाज की कार्यवाही में अपना सहयोग देवें।

सभी पाठकवृन्द आर्य बन्धुओं से विनम्र निवेदन है कि अगर कोई आर्य परिवार व उनके सगे-सम्बन्धी, मित्र, रिश्तेदार मायापुरी औद्योगिक क्षेत्र में अथवा उसके निकटवर्ती अन्य क्षेत्रों में रहते हों तो कृपया उन्हें सूचित करें अथवा श्री रजनीश वर्मा जी को मो. 981162087 व 9312163330 पर सम्पर्क करें। जल्द ही मायापुरी में आर्य समाज भवन हेतु भूमि क्रय करने का निश्चय किया गया है। आप सबके सहयोग यह यह कार्य शीघ्र सम्पन्न हो सकेगा ऐसी आशा है। - ***रजनीश वर्मा, संस्थापक, प्रधान***

आओ ! संस्कृत सीखें

संस्कृत ध्येय वाक्य (57)

गतांक से आगे....

संस्कृत का विरोध करने वाले एक-एक कर पढें कि संस्कृत किस तरह भारत की नींव है? इसे हटाने का मतलब पूरे भारत की नींव को समाप्त करना।

विभिन्न संस्थाओं के संस्कृत ध्येय वाक्य।

आर्य समाज
।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम।।
आर्य वीर दल
।। अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्तु।।
भारत सरकार
।। सत्यमेव जयते।।
लोक सभा
।। धर्मचक्र प्रवर्तनाय।।
उच्चतम न्यायालय
।। यतो धर्मस्ततो जयः।।
आल इंडिया रेडियो
।। बहुजनहिताय बहुजनसुखाय।।
दूरदर्शन
।। सत्यं शिवम् सुन्दरम्।।
गोवा राज्य
।। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत्।।
भारतीय जीवन बीमा निगम
।। योगक्षेमं वहाम्यहम्।।
डाक तार विभाग
।। अहर्निशं सेवामहे।।
श्रम मंत्रालय
।। श्रम एव जयते।।
भारतीय सांख्यिी संस्थान
।। भिन्नेष्वेकस्य दर्शनम्।।

-आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय,
मो. 9899875130

प्रेरक प्रसंग

आर्यसमाज ने क्या सिखाया है?

हुतात्मा भाई श्री श्यामलालजी के गतिमान व्यक्तित्व से, उनके तप, त्याग व सेवा से हैदराबाद राज्य की जनता बहुत प्रभावित थी। भाईजी के बढ़ते हुए प्रभाव से निज़ामशाही कम्पित हो रही थी और पौराणिक (उत्तर भारत के) ईर्ष्या से जल-भुन रहे थे। इस प्रभाव को नष्ट करने के लिए ही आर्यसमाज व महर्षि दयानन्दजी को गालियाँ देने में प्रवीण कई उत्तर भारतीय पौराणिक विद्वान् हैदराबाद के चक्कर काटते रहे। शास्त्रार्थ के लिए भी आर्यसमाज को कहते रहे। निज़ाम के राज्य में बड़े-बड़े मौलवी थे, परन्तु यह इतिहास का एक कठोर सत्य है कि उत्तर की भाँति दक्षिण में भी माधवाचार्यजी तथा उनके तिलकधारी पण्डितों में से किसी ने भी कभी भी किसी मुसलमान से शास्त्रार्थ नहीं किया। यह भी सम्भव है कि पौराणिकों को शास्त्रार्थ के नाम पर आर्यसमाज से भिड़ाने में पर्दे के पीछे निजाम सरकार का भी हाथ हो। यह आश्चर्य की बात है, परन्तु है सत्य कि हैदराबाद के प्रधानमन्त्री राजा सर किशनप्रसाद को इस्लाम में जाने से कोई कालूराम व माधवाचार्य नहीं रोक सका। उस प्रभावशाली व्यक्तित्व को तो पण्डित श्री रामचन्द्रजी देहलवी ने ही इस्लाम ग्रहण करने से बजाया। स्मरण रहे कि राजा सर किशनप्रसाद के पुत्र का नाम खाजाप्रसाद था। इससे पाठक अनुमान लगा सकते हैं कि उनपर इस्लाम का कितना गहरा प्रभाव था।

आर्यसमाज के व्यापक प्रभाव को नष्ट करने के लिए उदगीर में शास्त्रार्थ का आयोजन किया गया। कोई विख्यात आर्यशास्त्रार्थी तब दक्षिण में प्रचारार्थ न पहुँच सका। भाई श्यामलालजी ने अपनी नगरी में यह चुनौती स्वीकार की। पौराणिक पण्डित ने भाईजी को देखते ही कहा-"मेरे सामने किसी विद्वान् को लाओ। इसको क्या ले-आये? इसे तो यह भी पता नहीं कि वेद की.....कहाँ है"? (जो शब्द मैंने यहाँ छोड़े हैं वे इतने अश्लील हैं कि यहाँ लिखे नहीं जा सकते।)

भाईजी ने बड़े शान्त भाव से उत्तर देते हुए कहा कि हमने आर्यसमाज में यही सीखा है कि वेद परमात्मा की पावमानी कल्याणी वाणी है। वेद हमारी माता (स्तुता मया वरदा वेदमाता है। हम आर्य लोग माता के मुख का दर्शन तो करते हैं और करवा सकते हैं। हमने माता की..... नहीं देखी? यह तो पौराणिक पण्डित ही कर सकते हैं।

जिस शिष्टता व प्रत्युत्पन्नमति से श्यामभाई ने उत्तर दिया उससे श्रोतागण झूम उठे। उनकी साधना का पहले ही अमिट प्रभाव था। इस विजय ने आर्यसमाज के प्रभाव को और भी चार चाँद लगा दिये।

केवल इतिहास को सुरक्षित रखने की दृष्टि से यह घटना दी है। आनेवाली पीढ़ियाँ स्मरण रखें कि महर्षि दयानन्द के शिष्यों को किन किन विचित्र लोगों से पाला पड़ा।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु
साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

_तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी_ : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

आर्य समाज प्रीत विहार के साप्ताहिक सत्संग में सर्वाधिक आर्य जनों का सैलाब

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के शुभादेश का पालन करने हेतु दिनांक 1 अप्रैल 2018 को सर्वाधिक उपस्थिति दिवस के रूप में साप्ताहिक सत्संग को रखा गया। आर्यसमाज प्रीतविहार के प्रधान श्री सुरेन्द्र कुमार रैली जी द्वारा प्रीतविहार के सभी उत्साही अधिकारियों एवं कर्मचारियों को इसको सफल बनाने के लिए निम्नलिखित दिशा-निर्देशों का पालन योजनाबद्ध तरीके से करने की प्रेरणा दी गई तब जाकर यह कठिन सफलता प्राप्त हुई और संख्या की दृष्टि से प्रीतविहार को दिल्ली में प्रथम स्थान मिला :-

1. आर्य समाज के सभी दिवंगत व वर्तमान सदस्यों के यहां लिखित पत्र, फोन, मोबाईल सन्देश एवं वाट्सएप सन्देश द्वारा सूचना दी गई कि यह आपके पूर्वजों द्वारा स्थापित आर्यसमाज की प्रतिष्ठा का दिवस है। अत: सभी लोग सपरिवार अवश्य पधारें।

2. वैदिक शिक्षा केन्द्र प्रीतविहार जो आर्यसमाज द्वारा संचालित है, उसकी सभी अध्यापिकाओं को व्यक्तिगत फोन करने पर लगाया। लगभग सभी800 सदस्यों व पुराने विद्यार्थियों को तीन-तीन बार फोन किए गए।

3. प्रधान जी द्वारा लिखा गया निमंत्रण पत्र प्रति व्यक्ति के नाम से उनके घर पर सेवकों को भेजकर व्यक्तिगत रूप से भिजवाया गया जिससे लोगों में स्थाई निमंत्रण का भाव पैदा हुआ।

4. प्रधान जी ने स्वयं अपने व्यक्तिगत फोन से आर्यसमाज के सभी समूहों में वाट्सएप मैसेज, सामान्य मैसेज भेजे। पहले सूचना दी फिर रिमाइन्डर भेजा व 1 अप्रैल 2018 को पुन: याद दिलाई।

5. 1 अप्रैल 2018 से पूर्व ही मन्दिर परिसर में सार्वजनिक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें आर्ट/क्राफ्ट, संगीत व भाषण प्रतियोगिता का आयोजन क्षेत्र के सभी बच्चों के साथ किया जिसमें अलग-अलग प्रतियोगिताओं में लगभग 250 छात्र/छात्राओं ने भाग लिया। इन सभी को माता-पिता सहित सपरिवारर अपना-अपना परिणाम देखने व ईनाम लेने हेतु 1 अप्रैल 2018 को साप्ताहिक सत्संग में बुलाया गया।

6. सत्संग का समय बढ़ाकर प्रात: 7 से 11 बजे तक किया गया।

7. सबको आहुति चढ़ाने का बारी-बारी से अवसर भी मिला। लोगों ने खुश होकर पवित्र यज्ञाग्नि में अपने-अपने कर कमलों द्वारा आहुतियां लगाई।

8. साप्ताहिक सत्संग को व्यवस्थित ढंग से मॉडल सत्संग के रूप में प्रस्तुत किया गया- प्रथम संध्या, देव यज्ञ, बलि वैश्व देव यज्ञ के पश्चात् श्री धीरज कुमार जी व उनके साथियों द्वारा मधुर संगीत का आयोजन हुआ जिससे लोग अन्त तक मन्त्र मुग्ध बने रहे।

9. प्रसाद के रूप में ऋषि लंगर की भी व्यवस्था थी और सभी लोगों ने आश्वस्त किया था कि जलपान सब मिलकर ही करेंगे। आर्यसमाज के अधिकारियों ने 1500 आर्यो की उपस्थिति का लक्ष्य रखा था। अथक प्रयासों के फलस्वरूप यह संख्या 1080 तक पहुंच गई। *- यशपाल शास्त्री, आर्यसमाज प्रीतविहार*

आर्य समाज सैक्टर 3, 4, 5, 6 एवं विजय विहार, रोहिणी के लिए जनता फ्लैट क्रय हेतु सहयोग की अपील

आपको जानकर अत्यन्त हर्ष होगा कि दिल्ली के रोहिणी क्षेत्र में स्थित आर्य समाज में स्थानाभाव को देखते हुए एक जनता फ्लैट क्रय करने का निश्चय किया गया है जिसका मूल्य लगभग 18 लाख रुपये है।

इस हेतु समस्त आर्यसमाजों, दानी महानुभावों, सहयोगी संस्थानों, संगठनों से सहयोग सादर अपेक्षित है। आपसे निवेदन है कि अधिक से अधिक धनराशि का सहयोग नकद/चैक/बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से प्रदान करके पुण्य के भागी बनें।

कृपया अपनी सहयोग राशि का चैक/बैंक ड्राफ्ट **''दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा''** 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवाने की कृपा करें। आप चाहें तो अपनी दानराशि सीधे सीधे सभा के निम्न बैंक खाते में जमा कर सकते हैं। कृपया राशि जमा करते ही श्री मनोज नेगी जी मो. 9540040388 को सूचित करें तथा अपनी जमा पर्ची aryasabha@yahoo.com पर ईमेल कर दें ताकि रसीद भेजी जा सके।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
भारतीय स्टेट बैंक, जनपथ, नई दिल्ली
खाता सं. 33723192049, IFSC : SBIN0001639

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत आयकर छूट प्राप्त है।

-: निवेदक :-

धर्मपाल आर्य, प्रधान, मो. 9810061763
विनय आर्य, महामन्त्री, मो. 9958174441

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन - 2018

ध्यान देने योग्य बातें

1. महासम्मेलन में स्वयं तो आएं साथ में अपने परिवार व बच्चों को भी साथ लावें।
2. अपनी संस्थाओं के आर्यवीर/ आर्य वीरांगनाओं विद्यार्थियों को परिवार सहित साथ लावें।
3. अपने इष्ट-मित्रों, सम्बन्धियों को महासम्मेलन में आने के लिए प्रेरित करें।
4. ऐसे परिवारों को अवश्य आमंत्रित करें जो पहले कभी आर्य समाजी थे पर किन्हीं कारणों वश अब आर्य समाज से सम्बन्ध नहीं रख पा रहे हों।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली : 25-28 अक्टूबर, 2018

आने वाले महानुभाव अपने आने की व्यक्तिगत सूचना तुरन्त भेजें

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2018 दिल्ली, में भाग लेने वाले महानुभाव के लिए भोजन तथा आवास की व्यवस्था की गई है। अत: अपने आगमन की पूर्व सूचना अग्रिम भेजने की कृपा करें जिससे आपके ठहरने व भोजन की सुन्दर व्यवस्था की जा सके। आप अपना नाम, पता, मोबाईल नं., ईमेल पता निम्न प्रकार के प्रारूप में, **संयोजक, अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली-2018, 15 हनुमान रोड, दिल्ली-110001** के पते पर भेज देवें-

प्रपत्र का प्रारूप

1. नाम : ....पिता का नाम : ....
2. पूरा पता (स्पष्ट अक्षरों में) : ....
   ....
   राज्य .... पिन कोड : ....
3. मोबाईल नं. : ....
4. ईमेल (यदि हो तो) : ....
5. सम्बन्धित आर्य समाज का नाम : ....
6. आगमन की तिथि : .... प्रस्थान की तिथि : ....
7. आने का साधन : रेल/बस/निजी वाहन : ....
   (यदि निजी वाहन है तो वाहन का नाम व वाहन सं.):............................
8. आगमन स्टेशन का नाम : ....

दिनांक : .... हस्ताक्षर ....

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन: प्रकाशित स्मारिका हेतु निवेदन

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2018 के अवसर पर प्रकाशित स्मारिका हेतु वैदिक विद्वानों, लेखकों एवं चिन्तकों से निवेदन है कि आर्य समाज के अनछुए विषयों, समसामयिक विषयों एवं आर्य जगत की महान विभूतियों जिनके कार्यो को आजतक किसी ने नहीं जाना-पहचाना उनकी स्मृतियों को दृष्टिगत रखते हुए लेखों को ए-4 साइज के पेपर पर बाएं साईड में कम से कम 2 इंच का हाशिया छोड़कर स्पष्ट अक्षरों में लिखकर या टाईप कराकर **'स्मारिका सम्पादक'** के नाम **'अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2018', 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली -110001'** के पते पर या ईमेल aryasabha@yahoo.com पर ईमेल करने की कृपा करें। **-सम्पादक**

आर्य समाज, ए-3 ब्लाक पश्चिम विहार, नई दिल्ली में

राष्ट्र कल्याण महायज्ञ, भजन संध्या, योग सम्मेलन एवं सम्मान समारोह

अध्यात्म पथ मासिक पत्रिका के तत्त्वावधान में राष्ट्र कल्याण महायज्ञ, भजन संध्या,योग सम्मेलन एवं सम्मान समारोह का आयोजन रविवार 1 जुलाई 2018 सांय 3:30 से 7:30 बजे के बीच आर्य समाज मंदिर, ए-3 ब्लाक पश्चिम विहार में किया जा रहा है। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान संचालक स्वामी देवव्रत जी को अध्यात्म मार्तण्ड सम्मान से विभूषित किया जायेगा। आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर धर्मलाभ प्राप्त करें। *- आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, सम्पादक*

चुनाव समाचार

आर्य समाज सुन्दर विहार, दिल्ली
प्रधान - श्री कंवरभान क्षेत्रपाल
मंत्री - श्री अमर नाथ बत्रा
कोषाध्यक्ष - श्री प्रहलाद सिंह

आर्यसमाज मोलड़बन्द विस्तार, दिल्ली
प्रधान : श्री शिव कुमार भारद्वाज
मंत्री : श्री गजेन्द्र सिंह चौहान
कोषाध्यक्ष : श्री रणजीत सिंह रावत

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल या दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

बैंकॉक में पुरोहित चाहिए

थाईलैंड की राजधानी स्थित आर्यसमाज बैंकॉक के लिए एक सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है। गुरुकुलीय आर्ष पाठ विधि से शिक्षण प्राप्त पुरोहित महानुभाव जो हिन्दी, अंग्रेजी एवं संस्कृत भाषा पर समानाधिकार रखते हों तथा समस्त संस्कार सम्पन्न कराने की योग्यता रखते हों वे अपना प्रार्थना पत्र विस्तृत बायोडाटा, योग्यता आदि प्रमाण पत्रों एवं पासपोर्ट की फोटो प्रति **'मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001'** के पते पर भेजें या aryasabha@yahoo.com पर ईमेल करें। *- विनय आर्य, उपमन्त्री*

सोमवार 18 जून, 2018 से रविवार 24 जून, 2018
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2018–19–2020
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 14–15 जून, 2018
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018–19–2020
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 13 जून, 2018

प्रतिष्ठा में,

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन – 2018 दिल्ली

25–26–27–28 अक्टूबर, 2018 को

ऐतिहासिक, भव्य, सफल एवं उपयोगी बनाने हेतु

सुझाव आमन्त्रित

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन
25 से 28 अक्टूबर 2018
दिल्ली
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

समस्त सुधी पाठकों, वैदिक विद्वानों, लेखकों, चिन्तकों, आर्यसमाज के हितैषि महानुभावों से अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन को सफल और उपयोगी बनाने के लिए उनके अनुभवों के आधार पर सुझाव आमन्त्रित किए जाते हैं। आपने वर्ष 2006 के उपरान्त तथा इससे भी पूर्व में आयोजित महासम्मेलनों में भाग लिया है। इन सम्मेलनों में आपको कुछ व्यवस्थाएं अच्छी लगी होंगी तथा कुछ में सुधार की अपेक्षा भी की होगी।

अतः आपसे निवेदन है कि इस अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन को सफल, ऐतिहासिक, अविस्मरणीय और भव्य बनाने के लिए कृपया अपने सुझाव निम्न पते पर भेजें। आप चाहें तो ईमेल भी कर सकते हैं–

संयोजक
अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली—110001, दूरभाष : 09540029044
Email:aryasabha@yahoo.com; Web:www.aryamahasammelan.org;
www.thearyasamaj.org

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन–2018

नवीनतम सूचनाओं व जानकारियों हेतु जुड़ें व्हाट्सएप्प पर और साझा करें विचार

॥ ओ३म् ॥

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन–2018

25–26–27–28 अक्टूबर 2018 (दिल्ली)

महर्षि दयानन्द नगर, स्वर्ण जयन्ती पार्क, सैक्टर–10, रोहिणी, दिल्ली (भारत)

स्टॉल आवंटन हेतु आवेदन पत्र

संस्थान का नाम : ......

पूरा पता : ......

दूरभाष/चलभाष : ......

ई-मेल : ......

स्टॉलों की संख्या : ......

भुगतान का विवरण : ......

संस्थान प्रमुख का नाम : ......

दूरभाष/चलभाष : ......

ई-मेल : ......

प्रतिनिधियों के नाम : ......

दूरभाष/चलभाष : ......

ई-मेल : ......

बैनर पर मुद्रण हेतु नाम : ......

आप किस श्रेणी में स्टॉल लेना चाहते हैं निशान लगायें :

1. पुस्तकें ☐ 2. हवन सामग्री/यज्ञ पात्र ☐ 3. सीडी कैसेट्स ☐ 4. चित्र ☐ 8. औषधी ☐

6. अन्य : ......

आप अपने सामान पर कितने प्रतिशत की छूट देंगे : ......

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन–2018 में स्टॉल के नियम

- स्टॉल में केवल वैदिक साहित्य, प्रचार सामग्री, यज्ञ सम्बन्धित सामग्री आदि ही बेची जा सकेगी। अवैदिक साहित्य व प्रचार सामग्री नहीं बेची जायेगी।
- स्टॉल का साईज लगभग 10x10 होगा। एक स्टॉल में 3 टेबल व 2 कुर्सी दी जायेंगी।
- सभी स्टॉल धारक अपना सामान स्टॉल के अन्दर ही रखेंगे। स्टॉल के बाहर न सामान रखेंगे और न ही बेचेंगे। ऑडियो/वीडियो की आवाज कम रखेंगे जिससे कि दूसरे स्टॉल वालों को परेशानी न हो।
- दूसरे के स्टॉल में रखी टेबल आदि को उठाकर अपने स्टॉल में नहीं रखेंगे। अतिरिक्त सामान के लिये डेकोरेटर से सम्पर्क करें।
- आप किस श्रेणी में स्टॉल लेना चाहते है निशान अवश्य लगायें।
- स्टॉल का आवंटन समिति के विवेकानुसार होगा। समिति को अधिकार होगा कि वैदिक धर्म के विरुद्ध बेची जा रही सामग्री को जब्त करके स्टॉल खाली करा लिया जाये तथा किसी भी तरह का भुगतान वापिस नहीं होगा।
- भुगतान चैक/बैंक ड्रॉफ्ट/RTGS/NEFT/नकद द्वारा कर सकते हैं। चैक वापिस होने पर 500/- अतिरिक्त देना होगा तथा स्टॉल रद्द हो जायेगा।
- स्टॉलों की बुकिंग 25 सितम्बर 2018 को बन्द हो जायेगी। स्टॉल की संख्या सीमित है, बुकिंग पहले फुल हो जाने पर पहले भी बन्द हो सकती है। आवंटित स्टॉल नम्बर 20 अक्टूबर तक बता दिये जायेंगे।
- सम्पूर्ण बाजार की सफाई में अपना स्वैच्छिक सहयोग देंगे।
- प्लास्टिक की थैली पूर्णतया प्रतिबन्धित होगी। उल्लंघन करने वालों पर जुर्माना व उचित कार्यवाही की जायेगी।

हमने स्टॉल हेतु नियम पढ़ लिये हैं तथा इनको पालन करने का वचन देते हैं।

स्थान: आवेदक के हस्ताक्षर

संस्था का नाम

दिनांक: पद

कार्यालय प्रयोग हेतु

रसीद संख्या : स्टॉल :

भुगतान का विवरण : स्टॉल संख्या :

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह